शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -6
June
2025

जनजातीय महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में एक पहल: सामुदायिक रेडियो

(मध्यप्रदेश के वन्या सामुदायिक रेडियो, चिचोली केंद्र के विशेष संदर्भ में)

सुधा प्रजापति
शोधार्थी
डॉ. प्राची चतुर्वेदी
शोध निर्देशक
मानसरोवर ग्लोबल यूनिवर्सिटी, भोपाल (म.प्र.)

सारांश

यह शोध पत्र मध्यप्रदेश के बैतूल जिले के चिचोली क्षेत्र में संचालित *वन्या सामुदायिक रेडियो* के माध्यम से गोंड जनजातीय महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक सशक्तिकरण की भूमिका का विश्लेषण करता है। जनजातीय समाज, विशेषतः महिलाएँ, प्रायः मुख्यधारा के मीडिया से वंचित रहती हैं, ऐसे में सामुदायिक रेडियो एक सशक्त माध्यम बनकर उनके जीवन में जागरूकता, आत्म विश्वास और सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करता है। अध्ययन के अंतर्गत पाँच ग्रामों की 40 गोंड जनजातीय महिलाओं से प्राप्त आंकड़ों से यह स्पष्ट हुआ कि सामुदायिक रेडियो के माध्यम से महिलाओं को स्वास्थ्य, शिक्षा, सरकारी योजनाओं, स्वच्छता, पोषण, स्वरोज़गार एवं महिला अधिकारों की जानकारी प्राप्त हो रही है।

रेडियो कार्यक्रमों के प्रभाव से महिलाओं की मासिक आय, शिक्षा का स्तर और सामाजिक निर्णयों में भागीदारी में सकारात्मक परिवर्तन देखा गया है। अधिकांश महिलाओं ने यह भी माना कि यदि इन कार्यक्रमों को डिजिटल माध्यम (जैसे पॉडकास्ट) में संरक्षित किया जाए, तो यह और अधिक प्रभावी सिद्ध हो सकता है। निष्कर्षतः, वन्या सामुदायिक रेडियो जनजातीय महिलाओं के जीवन में एक परिवर्तनकारी उपकरण बनकर उभरा है जो उन्हें आत्म निर्भरता और सशक्तिकरण की दिशा में प्रेरित कर रहा है।

बीज शब्द

सामुदायिक रेडियो, जनजातीय समूह, गोंड जनजाति, सशक्तिकरण आदि।

E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -6
June
2025

प्रस्तावना

भारत देश अनेकता में एकता का प्रतीक है जहाँ विभिन्न धर्म, जाति, संस्कृतियां और भाषाओं के लोग एक साथ रहते हुए एक मजबूत राष्ट्रीय पहचान साझा करते हैं। ऐसा कहा भी जाता है कि किसी देश के बारे में जानने केलिए वहां के इतिहास, संस्कृति, कला साहित्यिक संग्रह और सभ्यता के कालक्रम को जानलेना बेहद ज़रूरी है। भारत देश के बड़े हिस्सों में रहने वाले जनजातीय समूह हमारी भारतीय संस्कृति का अटूट हिस्सा हैं, जो कि प्रत्येक क्षेत्र की धार्मिक मान्यताएं, संस्कृति और बोलियों को प्रस्तुत करते हैं। आज ये जनजातीय समूह हमारे देश में कहीं अधिक संख्या में तो कहीं लुप्तप्राय अवस्था में हैं। मानवकी सभ्यता, संस्कृति और आवश्यकताओं के अनुरूप ही विभिन्न संचार साधनों का भी विकास हुआ। परंपरागत संचार माध्यमों से शुरू हुई हमारे देश की संचार यात्रा समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविजन से होते हुए इंटरनेट की आभासी दुनिया तक पहुँच गई है। लेकिन, भारत जैसे विकासशील देश में सूचना और शिक्षा के प्रचार-प्रसार में रेडियो एक सशक्त माध्यम है। जिसकी पहुँच देश की करीब 99 प्रतिशत आबादी तक है। ऐसे में देश के विकास की दृष्टि से योजनाओं के सफल क्रियान्वयन में सामुदायिक रेडियो अहम भूमिका अदा कर सकते हैं। खासकर आंचलिक और सुदूर इलाकों में बसने वाली जनता तक विकास की किरण पहुँचाने का रेडियो सबसे सस्ता और सुगम माध्यम रहा है। जनजातीय महिलाएँ इस सुगम माध्यम का इस्तेमाल कर नकेवल अपने अधिकारों और नेतृत्व की क्षमता को पहचान रही हैं बल्कि जनजातीय क्षेत्रों की महिलाएँ सशक्तिकरण की मिसाल पेश कर अन्य महिलाओं के लिए उदाहरण बन रही हैं।

शोध का उद्देश्य

- सामुदायिक रेडियो में गोंड जनजातीय महिलाओं की रुचि और प्रभाव का अध्ययन करना।
- गोंड महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य, रहन सहन में आए आर्थिक-सामाजिक बदलाव का अध्ययन करना।

- सामुदायिक रेडियो कार्यक्रमों को डिजिटल रेडियो माध्यम (पॉडकास्ट) के रूप में में सहेजे जाने की आवश्यकता का अध्ययन।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध कार्य में मिश्रित निदर्शन विधि (Mixed Sampling Method) का प्रयोग किया गया है, जिसमें अनुसंधान की आवश्यकता के अनुरूप उद्देश्यात्मक निदर्शन (Purposive Sampling), दैव निदर्शन (Random Sampling) तथा सुविधाजनक निदर्शन (Convenience Sampling) पद्धतियों का प्रयोग किया गया है।

उद्देश्यात्मक निदर्शन के अंतर्गत मध्य प्रदेश के बैतूल जिले के चिचोली ब्लॉक स्थित वन्या सामुदायिक रेडियो केंद्र का चयन किया गया, क्योंकि यह क्षेत्र जनजातीय बाहुल्य है तथा यहाँ सामुदायिक रेडियो की प्रसारण रेंज में कई आदिवासी गाँव आते हैं। केंद्र के आसपास प्रसारण की स्पष्टता और सड़क मार्ग की सुलभता को ध्यान में रखते हुए पाँच गाँवों बीधवा, असाढ़ी, सिंघरई खापा, दूधिया और हर्रावाड़ी का चयन किया गया।

इन पाँचों गाँवों से कुल 200 महिला उत्तरदाताओं (प्रत्येक गाँव से 40 महिलाएँ) का चयन किया गया, जो शोध कार्य के लिए सुलभ, उपलब्ध तथा उत्तर देने में सक्षम थीं। उत्तरदाताओं की आयु 18 से 50 वर्ष के बीच रखी गई। उत्तरदाता चयन में दैव निदर्शन पद्धति अपनाई गई, जिसमें जो महिलाएँ पहले संपर्क में आईं और अनुसूची भरने के लिए उपलब्ध थीं, उन्हें शामिल किया गया। यह भी सुनिश्चित किया गया कि वे महिलाएँ स्थानीय बोली एवं संवाद को समझ सकें तथा प्रश्नों का उत्तर देने में सक्षम हों।

गोंड समाज की महिलाओं के रोज़गार साधन और स्थिति

मध्य प्रदेश के बैतूल जिले के अंतर्गत आने वाले चिचोली ब्लॉक जनजातीय बाहुल्य क्षेत्र है जहाँ गोंड जनजाति की बड़ी आबादी निवास करती है। गोंड समाज की महिलाएँ पारंपरिक जीवन शैली के साथ आधुनिक बदलावों की ओर भी धीरे-धीरे अग्रसर हो रही हैं। अधिकांश गोंड महिलाएँ पारिवारिक खेतों पर बुवाई, निराई, गुड़ाई, कटाई और फसल संभालने के कामों में सक्रिय रहती हैं। चिचोली वनवासी क्षेत्र होने के कारण यहाँ महिलाएँ तेंदूपत्ता, महुआ, हर्रा,

E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3 Issue -6 June 2025

बेहड़ा, चार बीज और साल बीज इकट्ठा कर बाजारों में बेचती हैं जो कि मौसमी आय का प्रमुख स्रोत भी है। कुछ महिलाएँ गाय, बकरी, मुर्गी आदि पालती हैं जिससे दूध और अंडे जैसे उत्पादों से घरेलू आय में मदद मिलती है। यहाँ कुछ क्षेत्रों की महिलाएँ घरों में अगरबत्ती, आचार, पापड़, टोकरी बुनाई जैसे लघु कुटीर उद्योगों से जुड़ी हुई हैं। यहाँ की महिलाएँ मनरेगा के माध्यम से मजदूरी कार्यों में भाग लेकर वर्ष में कुछ दिन कार्य करती हैं। इस क्षेत्र की कई महिलाएँ स्वयं सहायता समूह में सक्रिय हैं। ये समूह बैंक लोन लेकर छोटे स्तर पर आचार, मसाला, पापड़, सिलाई कढ़ाई आदि का कार्य कर रही हैं। मुख्यमंत्री लघु उद्यम योजना, आजीविका मिशन, प्रधानमंत्री वन धन योजना आदि के लाभ से महिलाएँ प्रशिक्षण व लाभ ले रही हैं। हालांकि अभी भी कम शिक्षा दर से महिलाएँ मुख्य धारा के रोज़गार से वंचित रह जाती हैं। इन क्षेत्रों की महिलाओं में अभी भी तकनीकी जानकारी की कमी है जिसके चलते वह मोबाइल, डिजिटल लेनदेन और सरकारी योजना पोर्टल्स की जानकारी से वंचित रह जाती हैं।

शोध अध्ययन के लिए संकलित तथ्यों के आधार पर परिणामों की व्याख्या

महिलाओं की आर्थिक स्थिति (मासिक आय के आधार पर)

तालिका क्रमांक-1.1

आय वर्ग	उत्तरदाताओं की संख्या	कुल उत्तरदाताओं का प्रतिशत
3 से 5 हजार	17	42%
5 से 7 हजार	16	39%
7 से 9 हजार	4	10%
10 हजार से अधिक	3	9%
कुल	**40**	**100%**

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621

Vol -3
Issue -6
June
2025

रेखाचित्र क्रमांक-1.1

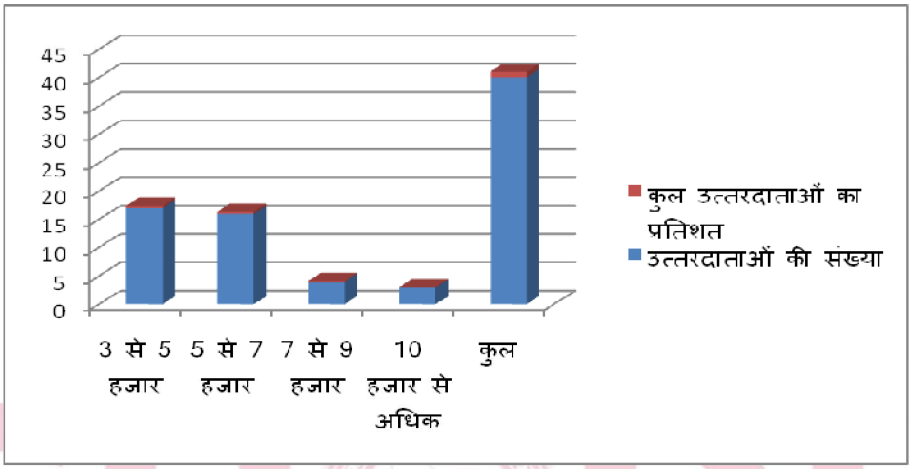

उपरोक्त तालिका में चार श्रेणियां 3 से 5 हजार, 5 से 7 हजार, 7 से 9 हजारऔर 10 हजार से अधिक की आय रखी गई। जिसमें यह पाया गया कि 42 प्रतिशतमहिलाओं की मासिक आय 3 से 5 हजार रही। वहीं 39 प्रतिशत महिलाओं की मासिक आय 5 से 7 हजार, 10 प्रतिशत महिलाओं की आय 7 से 9 हजार और 9 प्रतिशत महिलाओंकी मासिक आय 10 हजार से अधिक पाई गई।

महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति

तालिका क्रमांक-1.2

शिक्षा का स्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	कुल उत्तरदाताओं का प्रतिशत
अशिक्षित	13	33%
1 से 5वीं तक	16	41%
5वीं से 8वीं तक	7	18%
8वीं से 12वीं तक	3	8%
कुल	**40**	**100%**

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -6
June
2025

रेखाचित्र क्रमांक-1.2

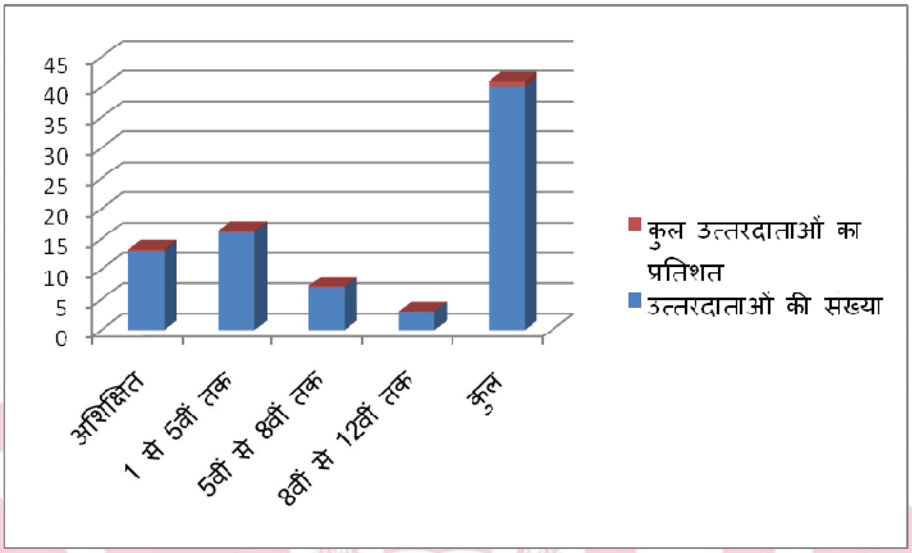

सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित किस तरह के कार्यक्रम को महिलाएँ सुनना पसंद करती हैं।

तालिका क्रमांक-1.3

कार्यक्रम	अत्यधिक पसंद	थोड़ा बहुत पसंद	पसंद नहीं है
स्वास्थ्य संबंधी	23%	2%	1%
स्थानीय बोली पर आधारित	9%	2%	1%
योजनाओं की जानकारी	8%	5%	0%
महिला एवं बाल विकास पर आधारित	23%	1%	0%
खेती-किसानी और कला संबंधी	6%	4%	2%
भजन और चिंतन संबंधी	1%	5%	1%
विविध कहानियों पर आधारित	1%	2%	1%
कुल प्रतिशत	71%	21%	6%

रेखाचित्र क्रमांक-1.2

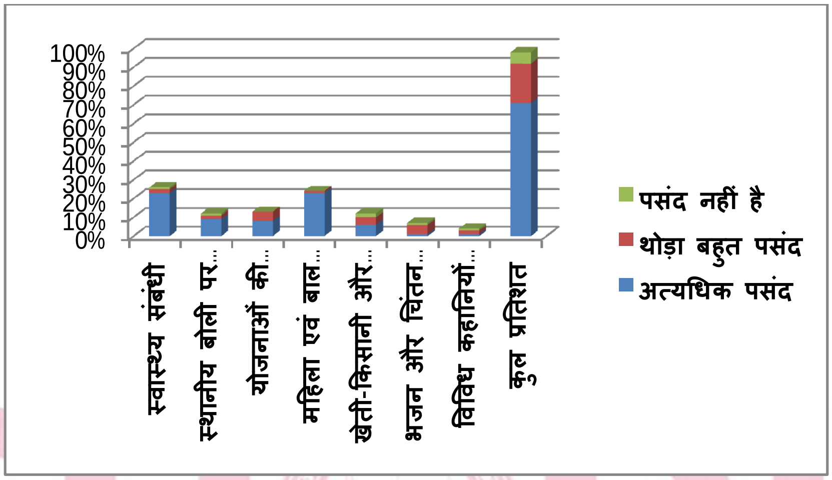

सामुदायिक रेडियो के माध्यम से सूचना औरशिक्षा प्राप्त करने का प्रतिशत

तालिका क्रमांक-1.4

जानकारी प्राप्त करने का उद्देश्य	उत्तरदाताओं की संख्या	कुल उत्तरदाताओं का प्रतिशत
सूचना प्राप्त करना	11	28%
शिक्षा प्राप्त करना	7	17%
सूचना और शिक्षा में सहायक होना	22	55%
कुल	**40**	**100%**

रेखाचित्र क्रमांक-1.3

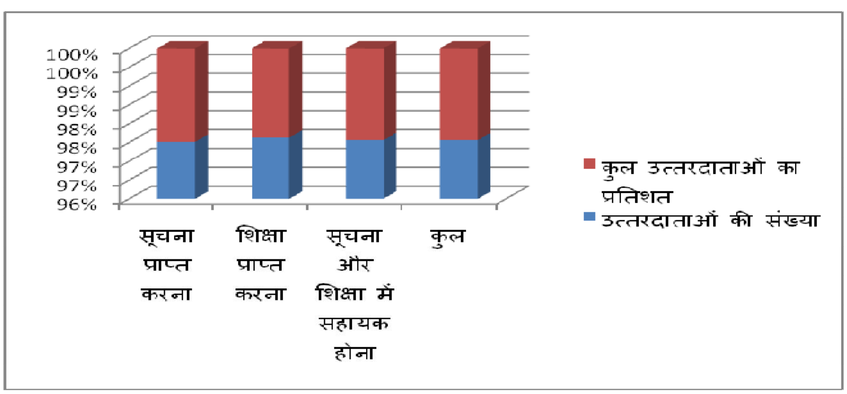

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -6
June
2025

रेडियो पर प्रसारित कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाओं की जीवनशैली में आए बदलाव का प्रतिशत

तालिका क्रमांक-1.4

बदलाव का स्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	कुल उत्तरदाताओं का प्रतिशत
बहुत ज़्यादा	32	79%
थोड़ा बहुत	5	12%
बिल्कुल नहीं	3	9%
कुल	40	100%

रेखाचित्र क्रमांक-1.4

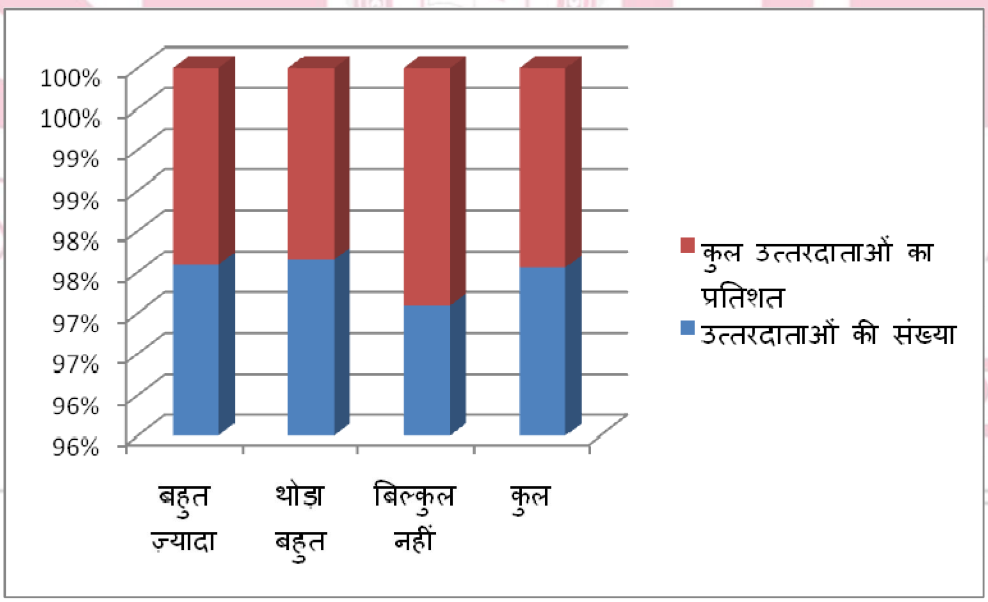

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -6
June
2025

सामुदायिक रेडियो के माध्यम से महिलाओं की जीवनशैली को बदलने वाले कार्यक्रम

तालिका क्रमांक-1.5

कार्यक्रम	अत्यधिक बदला	थोड़ा बहुत बदला	कोई बदलाव नहीं
स्वास्थ्य सुविधाओं पर आधारित कार्यक्रम	12%	1%	0%
सरकारी योजनाओं पर आधारित जानकारी	11%	1%	1%
युवा रोज़गार से संबंधी जानकारी	9%	2%	0%
व्यावसायिक क्रियाविधि संबंधी जानकारी	10%	0%	1%
बाल पोषण एवं विकास पर आधारित कार्यक्रम	12%	1%	0%
सरकारी सुविधाओं के विषय में जागरूकता	11%	2%	2%
कृषि संबंधी नीतियों के बारे में जागरूकता	7%	0%	1%
मातृत्व अधिकार और कानून संबंधी जानकारी	5%	1%	0%
सफलता की कहानी/साक्षात्कार	5%	5%	0%
कुल प्रतिशत	82%	13%	5%

रेडियो पर प्रसारित कार्यक्रमों को पॉडकास्ट के माध्यम से मोबाइल पर उपलब्ध कराए जाने की आवश्यकता?

तालिका क्रमांक-1.6

राय	उत्तरदाताओं की संख्या	कुल उत्तरदाताओं का प्रतिशत
आवश्यकता है	21	53%
आवश्यकता नहीं है	19	47%
कुल	40	100%

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3 Issue -6 June 2025

रेखाचित्र क्रमांक-1.6

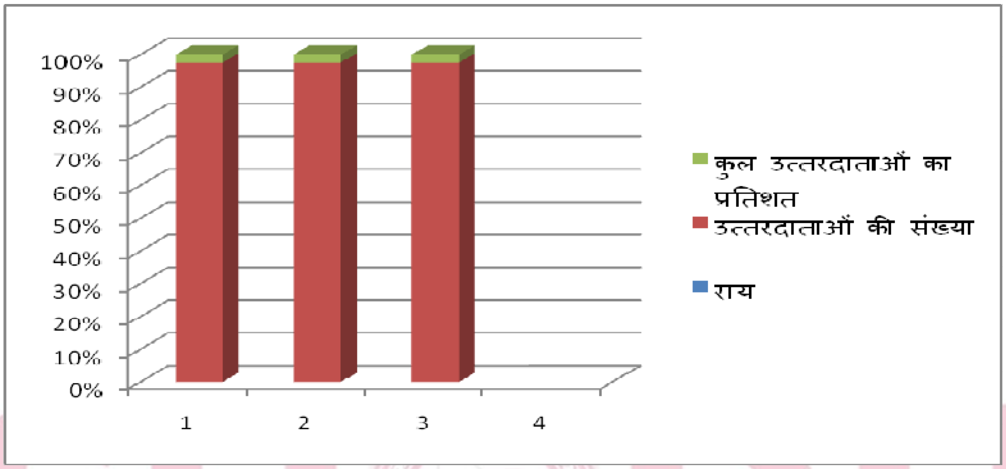

निष्कर्ष और संभावनाएँ

गोंड जनजाति कि महिलाओं पर सामुदायिक रेडियो का प्रभाव

जनजातीय महिलाओं का शिक्षा का स्तर काफी कम है। मिड डे मील जैसी योजनाओं के लालच में कुछ समय तक बालिकाओं को स्कूल भेजते हैं, लेकिन प्राथमिक शिक्षा होते ही ज्यादातर लड़कियों की पढ़ाई रोक दी जाती है। कई बार 11 से 15 वर्ष के बीच में ही लड़कियों का विवाह तय कर देते हैं। हालांकि सामुदायिक रेडियो पर महिला और बाल विकास पर आधारित कार्यक्रमों को सुनने के बाद महिलाओं के बीच जागरूकता आई है। जनजातीय समूहों को अपने अधिकारों और सरकार द्वारा उनके लिए संचालित की जाने वाली योजनाओं के प्रति जागरूकता बढ़ी। जनजातीय महिलाएँ अपने लाभ की बातों को सुनती हैं, समझती हैं और उन्हें अपनी दिनचर्या में शामिल करती हैं। महिलाओं का वर्चस्व भी अब पुरुषों की तुलना में कम नहीं है। हालांकि निर्णय लेने का अधिकार नहीं है। उन्हें पर्दा प्रथा सहन करना पड़ता है। लेकिन अपने अधिकारों को जानने समझने के बाद अब घर की चर्चाओं में महिलाएँ भी अपना पक्ष आसानी से रख रही हैं।

सन् 2011 में वन्या सामुदायिक रेडियो के आने से क्षेत्र में कुछ रोचक बदलाव देखने को मिले हैं। आज के समय में जनजाति समूहों के अधिकतर बच्चे पढ़ने के लिए प्राथमिक स्कूल के साथ साथ गांव के बाहर के नामचीन स्कूलों में भी जा रहे हैं। जनजाति समुदायों

E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -6
June
2025

की महिलाओं की आवश्यकताओं में भी अब काफी बदलाव आ रहे हैं। वर्तमान समय में जहां सामुदायिक रेडियो के प्रसारण से यहां स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर बढ़े हैं वहीं सरकारी की कई योजनाओं के माध्यम से इन महिलाओं को मज़दूरी और खेती बाड़ी करके रोज़ाना पैसे कमाने के अवसर भी प्राप्तहो रहे हैं। आर्थिक आंकड़ों की बात करें तो अपनी जीविका चलाने के लिए ये महिलाएँ अब पांच हज़ार रुपये तक की राशि एक माह में आसानी से कमा ले रही हैं। घरपर रहने वाली घरेलू महिलाएँ भी अन्य महिलाओं को देखकर आत्मनिर्भर होने काप्रयास कर रही हैं। शिक्षा, महिला स्वास्थ्य एवं बाल विकास से संबंधित कार्यक्रमों से जनजातीय वर्ग की महिलाओं के जन जीवन और सोचने के तरीकों में भी काफी बदलाव आए हैं। जनजातीय महिलाएँ अब स्वच्छता और पोषण की परिभाषा भी सही मायने में जान सकी हैं। और इन आदतों को वह अपने दैनिक जीवन में शामिल कर रही हैं। साथ ही अपने घर परिवार के अन्य लोगों को भी अच्छी आदतें अपनाने के लिए प्रेरित कर रही हैं।

सामुदायिक रेडियो केंद्रों द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों को डिजिटल माध्यम में संरक्षण की आवश्यकता

सामुदायिक रेडियो के माध्यम से जिन कार्यक्रमों का निर्माण होता है उन्हें एक निर्धारित समय पर प्रसारित किया जाता है। ऐसे में इन कार्यक्रमों को यदि श्रोता दोबारा सुनना चाहें तो यह संभव नहीं हो पाता। अध्ययन के माध्यम से इस बात की जानकारी प्राप्त हुई कि कई ऐसे कार्यक्रम थे जिनके बारे में महिलाओं ने यह बताया कि वो कार्यक्रम उन्हें पसंद आए लेकिन उन्हें दोबारा उन्हें सुनने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ। रेडियो के कार्यक्रमों को अपनी पसंद के अनुसार चयन कर सुनने के लिए डिजिटल रेडियो एक अच्छा विकल्प हो सकता है। ऐसे में यह विकल्प महिलाओं को बताने के बाद उनका यह कहना था यदि वह अपने पसंदीदा कार्यक्रम अपनी पसंद के अनुसार किसी भी समय सुन पाएँ तो यह और भी अच्छा होगा। चूंकि रेडियो प्रसारण की एक सीमित रेंज होती है ऐसे में डिजिटल रेडियो के माध्यम से प्रसारित कार्यक्रमों की रेंज ग्लोबल हो सकती है और इसे जनजातीय समुदाय के लोग ही नहीं, बल्कि अन्य समाज, शहर, प्रदेश, देश और विश्व के हर कोने से लोग सुन सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. तिवारी, शिवकुमार (1986) मध्यप्रदेश के आदिवासी, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल
2. सिंह, बृजेश कुमार (2011) गोंडजनजाति में सांस्कृतिक परिवर्तन, भारती प्रकाशन
3. श्रीवास्तव, आर-एन- (1994) जनजातीय विकास के चार दशक, ज्ञानदीप प्रकाशन
4. फ्रैंक डान (2005), कम्युनिटी रेडियो, द नेशन
5. कुमार, मनोज (2016) कम्युनिटी रेडियो, आलेख प्रकाशन
6. बाग़ची, तिलक (2023) गांधी, जनजाति एवं ग्रामीण विकास, रावत पब्लिकेशंस
7. ग्रामवाणी, सामुदायिक रेडियो : एक सीआर स्टेशन की स्थापना (2007), वॉयस ऑफ रेडियो
8. शर्मा ए- (2015) कम्युनिटी रेडियो फॉर वुमेन डेवलपमेंट, बायो टेक बुक, नई दिल्ली

SHODH SAHITYA शोध साहित्य